षष्ट अध्याय

चरित्र शिल्प

चरित्र–चित्रण शिल्प की प्रधानता

पात्रों का चयन

पात्रों का सृजन

चरित्र–चित्रण की प्रणालियाँ

प्रत्यक्ष

अप्रत्यक्ष (परोक्ष)

मनोविश्लेषण प्रधान शिल्प

स्वयं पात्र द्वारा

उपन्यासकार या अन्य पुरूष द्वारा

मानसिक प्रवृत्तियों की प्रधानता

कुण्ठा, आत्मरति, पाशविकता, अहंवादिता, मनोविकृति

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

षष्ट अध्याय

चरित्र शिल्प

उपन्यासकार विभिन्न तथ्यों को व्यक्त करने के लिए अनेक प्रकार के पात्रों का सृजन करता है और ये पात्र उपन्यासकार की कसौटी पर खरा उतरने का प्रयास करते हैं। चरित्र उपन्यास में विभिन्न तथ्यों के उद्घाटन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। "उपन्यास के पूर्वकथित समस्त तथ्यों का मूलाधार एकमात्र चरित्र ही तो है।"[1] चरित्र के माध्यम से ही उपन्यासकार कथावस्तु को आगे बढ़ाता है– "यही वह आधार है जिस पर कथा का महल खड़ा किया जाता है।"[2] कथा में वही पात्र सफल माने जाते हैं, जो अपनी छाप पाठकों पर छोड़ जाते हैं। इस सम्बन्ध में शिवनारायण श्रीवास्तव लिखते हैं– "चरित्रांकन की सफलता तो यह है कि पुस्तक बंद कर देने तथा सूक्ष्म विवरण भूल जाने पर भी उसके पात्र हमारी स्मृति में जीवित रह सके।"[3] इसलिए कथा में पात्रों का प्रभावशाली होना आवश्यक है। "उपन्यास के चरित्रों का चित्रण गहरा और प्रभावशाली होना आवश्यक है। चदि चरित्र प्रभावशाली नहीं होंगे तो वे अपना प्रभाव पढ़ने वालों पर नहीं छोड़ पायेंगे।"[4]

उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं एवं विकृतियों का उद्घाटन किया है। इन सामाजिक समस्याओं एवं विकृतियों का सम्बन्ध किसी न किसी पात्र से है। जोशी जी ने इन पात्रों के वाह्य स्वरूप का ही उद्घाटन नहीं किया है, वरन् पात्र के अन्तर्मन में अवस्थित विभिन्न प्रकार की विकृतियों का उद्घाटन भी किया है। इनके उद्घाटन के लिए

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 447

2 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ– 37

3 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 447–448

4 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ– 40–41

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जोशी जी ने विभिन्न पात्रों का सहारा लिया है। जो कि कथा–विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुए कथा को पूर्णता प्रदान करते हैं।

इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में चरित्र–चित्रण शिल्प की प्रधानता है। "कलात्मक दृष्टि से जोशी जी के उपन्यासों का मूलाधार चरित्र है। चरित्र के रूप, वर्ग, स्थिति और स्तर की खोज और उसका उद्‌घाटन उनके सभी उपन्यासों का मूल तत्व है।"[1] चरित्रों के उद्‌घाटन के लिए उन्होंने विभिन्न प्रकार के पात्रों को चुना है। समाज में रहते हुए समाजगत व व्यक्तिगत विभिन्न समस्याओं, विषमताओं एवं दुरूहताओं से लेखक का जैसा साक्षात्कार होता है, उपन्यासकार उसी आधार पर अपने पात्रों का स्वरूप निर्धारण करता है। चरित्र–चित्रण के लिए उन्होंने पात्रों के स्वतंत्र एवं निजी विचारों को बल दिया है। "यदि किसी दिन यह प्रमाणित हो जाए कि मेरे सभी कथा पात्रों के विचार मेरे ही अपने विचार हैं तो उस दिन मेरी कहानी कला की सबसे बड़ी असफलता सिद्ध हो जायेगी।"[2] उन्होंने व्यक्ति की वाह्य प्रवृत्ति को महत्व न देकर उसकी आन्तरिक प्रवृत्तियों को अनावृत किया है। "जोशी जी के पात्र व्यक्ति होते हैं, किन्तु उन्हें वे समाज से जोड़ते हैं– सामाजिक हित के लिए नहीं, बल्कि उनकी विसंगतियाँ उजागर करने के लिए, उनके अहं को अनावृत करने के लिए, उनके आचरण के वैषम्य को दिखाने के लिए, सामाजिक समस्याओं, परिस्थितियों और हलचलों के बीच अपनी यौन–कुण्ठा, हीनता और अहं के लिए चलते हैं।"[3] जोशी जी के उपन्यासों में चरित्र–चित्रण शिल्प का अध्ययन करने के लिए हमें पात्रों के चयन एवं सृजन का अध्ययन करेंगे।

पात्रों का चयन : जोशी जी अपने चरित्रों के उद्‌घाटन के लिए मनोविश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य का सहारा लिया है। इनके मुख्य पात्र विभिन्न

---

1 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ– 150

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, भूमिका

3 'हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा' : रामदरश मिश्र, पृष्ठ – 104

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मानसिक कुण्ठाओं से ग्रस्त हैं। इन्होंने अपने पात्रों का चयन सामान्य प्राणी जगत से न लेकर अस्वस्थ्य एवं विचित्र प्राणियों से लिए हैं। इन अस्वस्थ्य तथा दुर्बल चित्त वाले पात्रों के अन्तर्मन की चीर–फाड़ में जोशी जी सिद्धहस्त हैं। दुर्बल पात्रों के कुण्ठाग्रसत एवं अस्वस्थ्य प्रवृत्तियों को उपन्यासकार आसानी से उद्‌घाटित कर सकता हैं; इसलिए मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने इस प्रकार के पात्रों की मानसिक स्थिति को ध्यान में रखकर ही अपने पात्रों का चयन किया है।

इच्छाशक्ति के अभाव के कारण इनके सभी पात्र विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों, कुण्ठाओं, संस्कारों से ग्रसित होकर असाधारण एवं असामान्य व्यवहार करते हैं। 'लज्जा' उपन्यास की नायिका लज्जा स्त्री जनित काम भावना से ग्रसित है। अपनी दमित कामवासना के कारण ही वह डॉ. कन्हैयालाल की ओर आकर्षित होती हे। उपन्यास का दूसरा पात्र रंजन असाधारण प्रवृत्ति का है। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के बाद भी वह दुःख से लगाव रखता है और क्षणिक सुखों से घृणा करता है। उसी प्रकार कन्हैयालाल स्वार्थी एवं चापलूस प्रवृत्ति का है, जो भोली–भाली लड़कियों को अपने प्रेमजाल में फाँसता है। 'संन्यासी' के नन्दकिशोर का अहंकारी चरित्र जंयती को आत्महत्या की ओर धकेलता है और शांति को उससे दूर जाने के लिए बाध्य करता है, जयंती नन्दकिशोर से कहती है– "आप बड़े अहंकारी हैं, आपका अहंभाव हद दर्जे तक बढ़ा हुआ है।"[1] 'पर्दे की रानी' की नायिका निरंजना माँ की हत्या के कारण कुण्ठा की भावना से ग्रस्त है। वह स्वयं कहती है– "यदि मैंने सुखदेइया की बात उस समय न मानी होती, और अन्तिम बार माँ का मुख न देखा होता, तो सम्भवतः मेरा परवर्ती जीवन ऐसा विषाक्त न हुआ होता, सम्भवतः वह गहन अन्धकारमयी कराल छाया मेरे जीवन को न घेरे होती, जिसने मेरे सुख सन्तोष और राम–रंग की प्रत्येक अनुभूति को जहरीले गैस के से प्रभाव से मलिन,

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 178

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

विकृत और विध्वस्त कर दिया है।"[1] उपन्यास का पुरूष पात्र इन्द्रमोहन कामदग्ध है, जो निरंजना को पाने के लिए अपनी पत्नी शीला की हत्या कर देता है।

'प्रेत और छाया' का नायक पारसनाथ अहं एवं कुण्ठा की भावना से ग्रस्त है, कुण्ठा के कारण उसके मन में स्त्री जाति के प्रति प्रतिहिंसा की भावना विद्यमान है। मंजरी और नन्दिनी भी उपन्यास में असामान्य व्यवहार करती हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक कारणों के कारण मंजरी के अन्दर हीनता की भावना उत्पन्न होने लगती है। 'निर्वासित' उपन्यास में महीप अपने बबुआ रूप के कारण हीनताग्रन्थि से पीड़ित है। वह असाधारण पात्र है, जो अपने आदर्शों के कारण आई.सी.एस. की परीक्षा में सम्मिलित नहीं होता है। ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह भोगवादी प्रवृत्ति का पात्र है। मुक्तिपथ उपन्यास का नायक राजीव असाधारण पात्र है। जीवन की वाह्य परिस्थितियों एवं समाज के उपेक्षित रवैये के कारण वह विभिन्न मनोग्रन्थियों से ग्रसित है। वह मानवीय प्रेम की अवहेलना कर अनवरत् कर्म को ही महत्वपूर्ण बताता है। सुनन्दा नव–यौवन के उमंग के कारण काम भावना से ग्रस्त है। 'त्याग का भोग' में एक अभिजातवर्गीय काम वासना से ग्रसित पात्र रंजन का चारित्रिक उद्घाटन किया गया है, जो बुर्जुवा प्रकृति का प्रतीक है। मनिया के मन में बचपन में माँ द्वारा पिता की हत्या के कारण एक अज्ञात कुण्ठा विद्यमान है। 'जहान का पंछी' में एक मध्यमवर्गीय पात्र की संघर्षमय कथा द्वारा समाज की विभिन्न कुप्रथाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है। 'ऋतुचक्र' उपन्यास में दादा अर्थात मिलन कुमार चटर्जी एवं प्रतिमा के अभुक्त कामवासना का वर्णन है। 'भूत का भविष्य' में सामाजिक प्रताड़ना से पीड़ित एवं उपेक्षित भूतनाथ का चारित्रिक विश्लेषण किया गया है।

इलाचन्द्र जोशी के अधिकांश पात्र कुण्ठाग्रस्त होने के कारण विभिन्न प्रकार के मनोविकारों से जकड़े हुए हैं, जो विभिन्न कार्य व्यापारों को अंजाम देते

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 33

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हैं। इनके पात्र दुर्बल, कुण्ठाग्रस्त विभिन्न मानसिक विकृतियों से ग्रस्त असाधारण एवं असामान्य हैं। 'लज्जा' उपन्यास का राजू, 'पर्दे की रानी' की शीला, 'मुक्तिपथ' का राजीव और सुनन्दा, 'जहाज का पंछी' का नायक इस प्रकार के असाधारण पात्र हैं, जो किसी दुर्बलता के आगे झुकते नहीं हैं, ये समाजहित में अपना सबकुछ अर्पण करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

पात्रों का सृजन : पात्रों के सृजन के लिए जोशी जी ने पात्रों की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों के उद्‌घाटन की ओर अधिक ध्यान दिया है। पात्रों के असाधारण प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने पात्रों के कुण्ठाग्रस्त एवं वैचित्र्यपूर्ण स्थिति का वर्णन कर उनका सृजन किया है। पात्रों के अनुरूप ही मानसिक विकृतियों का वर्णन कर उनका चित्रण किया गया है। यह प्रवृत्ति सर्वत्र दिखाई देती है। 'लज्जा' उपन्यास में अपनी मानसिक स्थिति का वर्णन स्वयं लज्जा करती है– "मुझ हत्यारी नारी ने आज समस्त प्रकृति को सारे विश्व को अपने अन्तस्तल की घृणा से लीप–पोतकर एकाकार कर दिया है।"[1] 'संन्यासी' का नायक नन्दकिशोर अपने संन्यासी वेश के बारे में कहता है– "मैंने संन्यासी का वेश धारण किया है, संदेह नहीं पर संन्यासी मैं न कभी था और न हूँ? जीवन के अनेक कडूवे अनुभव भी हुए, देशसेवा भी की जेल भी गया, पर फिर भी इस सूखे हृदय में इस समय भी जब दो–चार बूँदें आँसू की किसी समय पड़ जाती हैं, तो इसमें तत्काल हरियाली छाने लग जाती है। यह क्यों? मैं चाहता हूँ कि शुष्क बालू की तरह इस हृदय का कण–कण, जर्रा–जर्रा निखिल शून्य में बिखर जाय, राख की तरह यह जड़ और निर्जीव बन जाय उफ! अनन्त काल तक सुख–दुःख की अनुभूति का यह निष्ठुर चक्र मेरा पीछा नहीं छोड़ने का।"[2]

'पर्दे की रानी' की नायिका निरंजना कुण्ठा से ग्रसित होने के कारण एकान्तप्रिय हो जाती है और पढ़ाई के दौरान हॉस्टल में भी अन्य लड़कियों से

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 5

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 5

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हेल–मेल नहीं बढ़ाती है। अपनी विचित्र मनोवृत्ति के कारण वह इन्द्रमोहन के चरित्र को जानने के बाद भी उसकी ओर आकर्षित होती है। 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ के मन में स्त्रियों के प्रति एक अलग ही किस्म का भाव घर कर जाता है। स्त्री जाति के प्रति उसके मन में केवल घृणा की भावना है– "स्त्री और उसकी इज्जत : आज तक कितनी स्त्रियों की इज्जत मैंने की है? और करू भी क्यों? इस जाति में ऐसा कौन–सा गुण है भी जिसका आदर किया जा सके : मेरा ध्रुव विश्वास है कि संसार में केवल वे ही स्त्रियाँ सती साध्वी होने का ढोंग रच सकती हैं, जिन्हें या तो समाज के कड़े बन्धनों ने स्वेच्छाचरण का मौका नहीं दिया है, या जिन्हें प्रार्थित पुरूष प्राप्त नहीं हो पाए हैं।"[1] 'निर्वासित' में अपने बबुआ रूप एवं प्यार में सफलता के कारण कुण्ठित महीप का चारित्रिक विश्लेषण किया गया है। वह असाधारण प्रवृत्ति का व्यक्ति है। उसकी असाधारणता का परिचय प्रारम्भ में ही मिल जाता है जब वह आई.सी.एस. की परीक्षा नहीं देता है।

'त्याग का भोग' में बुर्जुवा प्रवृत्ति का नृपेन्द्ररंजन का चारित्रिक विश्लेषण किया गया है। उसकी इस प्रवृत्ति का पता उपन्यास के प्रारम्भ में ही लग जाता है, जब वह मनिया की सम्पूर्ण दुकान को दो सौ रूपये में खरीद लेता है। 'जहाज का पंछी' के नायक का सम्पूर्ण जीवन असाधारणताओं से भरा पड़ा है। वह कलकत्ता महानगरी में इधर–उधर भटकता है। अपनी मुख्य समस्या का वर्णन स्वयं करता है– "जीवन के विविध चक्करों में उलझनों और तरह–तरह के संघर्षों का सामना करने के बाद जब परिस्थितियों ने मुझे इस विराट नगरी में लाकर पटक दिया, तब मुझे कहीं इतनी भी जगह सुलभ न हो सकी जितने में मैं दो हाथ और दो पाँव पसारकर लेट सकता और अपने पिछले सत्ताइस वर्षों के जीवन की थकान कुछ समय के लिए भुला सकता।"[2]

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 37

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'ऋतुचक्र' उपन्यास में प्रकृति प्रेमी विवेकशील दादा अर्थात् मिलन कुमार चटर्जी एवं अन्य विभिन्न पात्रों की मनोवृत्तियों का उद्‌घाटन अनेक प्रकार की घटनाओं के माध्यम से किया गया है। सभी पात्रों की मानसिक वृत्तियों का उद्‌घाटन विवेकशील दादा ही करते हैं। 'भूत का भविष्य' उपन्यास में भूतनाथ की विचित्र मानसिक प्रवृत्ति लेखक ने स्वयं भूतनाथ के माध्यम से किया है– ".....तुम्हारे समान महाब्राह्मणों के भीतर हजारों वर्षों से जो यह धारणा जमी हुई है कि तुम्हारी ही जाति को विधाता ने बल, बुद्धि, विद्या, ज्ञान और पौरूष में सर्वश्रेष्ठ बनाया है और वह विधि–प्रदत्त श्रेष्ठता अनन्तकाल तक वैसी ही बनी रहेगी।....."[1] नन्दा और सुनन्दा के एक–दूसरे के प्रति आकर्षण व विकर्षण का वर्णन भी उपन्यास में हुआ है। 'कवि की प्रेयसी' में नायक सोमिल की साधारण प्रकृति का वर्णन उपन्यासकार ने इन शब्दों में किया है– "सोमिल सरल प्रकृति का निर्द्वन्द युवक है, उसे कोई अभाव नहीं है, स्त्रियों के प्रति भी उसके मन में कोई लालसा जगी नहीं है।"[2]

इलाचन्द्र जोशी के थोड़े से पात्रों से काम चला लेने की प्रवृत्ति सर्वत्र विद्यमान है। उपन्यासों में उन्होंने अनावश्यक पात्रों का जमघट न लगाकर सीमित पात्रों से ही काम चला लिया है, किसी–किसी में तो महज एक–दो पात्रों के सहारे ही मानव मन की मूल प्रवृत्तियों का उद्‌घाटन और विश्लेषण का प्रयत्न किया गया है। "गौण पात्रों का जमघट पैदा न कर केवल कुछ ही पात्रों की ओर ध्यान केन्द्रित किया है और इन पात्रों के अन्तर्मन के चित्रण में वे इतने तन्मय हो गए हैं कि उन्हें गौण पात्रों की जरूरत ही नहीं पड़ी है।....."[3]

चरित्र–चित्रण की प्रणालियाँ : उपन्यास पढ़ते समय पाठकों को अपनी कल्पना के सहारे उसमें वर्णित विभिन्न पात्रों की वेश–भूषा, आकृति, बातचीत

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 97

2 'कवि की प्रेयसी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ –

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 5

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आदि के द्वारा अनुमान करना पड़ता है। यह अनुमान तभी ठीक हो सकता है, जब लेखक अपने वर्णन द्वारा उन पात्रों में प्राण शक्ति डालकर सजीवता लाता है। इसके लिए लेखक पात्रों की बाह्य व आन्तरिक दोनों ही विशेषताओं का मूल्यांकन करता है, जो पात्रों में सजीवता लाते हैं। उपन्यासकार पात्रों की भीतरी–बाहरी जगत को प्रकट करने के लिए उनके विचारों को निबन्ध रूप में संजोकर पाठकों के सम्मुख रखता है। बाह्य विशेषताओं के अन्तर्गत पात्र की आकृति, स्वरूप, वेशभूषा आदि का वर्णन किया जाता है, जबकि आन्तरिक चित्रण के अन्तर्गत पात्र की विभिन्न मनोवृत्तियों उनके व्यवहारों, कुण्ठाओं एवं अन्य मनःस्थितियों का उद्‌घाटन करता है।

इलाचन्द्र जोशी ने चरित्र–चित्रण के लिए दो प्रणालियाँ अपनायी हैं–प्रत्यक्ष प्रणाली और अप्रत्यक्ष प्रणाली। प्रत्यक्ष प्रणाली के अन्तर्गत उन्होंने पात्रों का चरित्र–चित्रण विभिन्न विधियों के माध्यम से स्वयं किया है, जबकि अप्रत्यक्ष या परोक्ष प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों के क्रिया–कलाप, वार्तालाप, डायरी एवं आत्मविश्लेषण द्वारा पात्रों का चरित्र–चित्रण किया है। उनके आत्मकथात्मक उपन्यासों– 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'त्याग का भोग', 'जहाज का पंछी' में परोक्ष प्रणाली तथा 'प्रेत और छाया', 'मुक्तिपथ' और 'निर्वासित' में प्रत्यक्ष प्रणाली का प्रयोग किया है। लेकिन आत्मविश्लेषण द्वारा उनका चरित्रोद्‌घाटन करने के लिए उन्होंने परोक्ष प्रणाली का ही सहारा लिया है। उनके उपन्यासों के अध्ययन के द्वारा चरित्र–चित्रण की विभिन्न प्रणालियों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रत्यक्ष प्रणाली : इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में प्रत्यक्ष प्रणाली का अनुसरण करते हुए पात्रों के चरित्र–चित्रण के लिए उनका आकृति वर्णन, मनोभावों का वर्णन एवं विभिन्न चरित्रगत प्रवृत्तियों आदि का सहारा लिया है। 'लज्जा' उपन्यास में कन्हैयालाल और प्रोफेसर किशोरीमोहन के स्वभाव का वर्णन लज्जा द्वारा किया गया है – "डॉक्टर कन्हैयालाल और प्रोफेसर किशोरीमोहन में

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

गाढ़ी मित्रता थी, दोनों फुर्तीले, बोलने में तेज, बातें बनाने में कुशल और सभा चतुर थे। तुच्छ से तुच्छ घटना पर भी ये मित्रद्वय अपने रचना कौशल से ऐसा महत्व आरोपित कर देते थे और उसे इस तरह रोचक बना देते थे कि सबसे सुनने वाले दंग रह जाते।"[1]

'प्रेत और छाया' में वेशभूषा एवं आकृति वर्णन द्वारा चरित्र–चित्रण किया गया है– "उनकी उम्र पैतालिस वर्ष के लगभग होगी। वह एक मटमैले रंग की सूट और प्रायः उसी रंग की टाई पहने थे। जिस व्यक्ति के साथ वे बातें कर रहे थे, वह एक गोरे रंग का, कुछ दुबला सा, सुदर्शन युवक था। उसके सिर के काले और घुँघराले बाल बहुत घने और कुछ बड़े दिखाई देते थे।"[2] मंजरी का आकृति वर्णन इस प्रकार किया है– "उसकी उम्र उन्नीस बीस वर्ष के लगभग मालूम होती थी, उसका गेहूँआ रंग था, वह एक 'प्लेन' साड़ी पहने थी। सिर आधा खुला हुआ था और बाल बड़ी सादगी से सँवारे हुए थे।..... उसका लम्बा कद कुछ दुबलापन लिए था। ऐसा मालूम होता था जैसे उसके लम्बे–लम्बे और कुछ–कुछ पिचके हुए से गाल उसकी ठुड्डी से मिले हुए नहीं हैं, बल्कि उसके पतले से ओठों के ईर्द–गिर्द दो छोटे–छोटे से गड्डे गालों और ठुड्डी के बीच में व्यवधान उत्पन्न किये हुए हैं।"[3] 'ऋतुचक्र' में आकृति और वेशभूषा द्वारा प्रतिमा का चित्रण किया गया है – "एक तनिक लम्बे कद की महिला एक हल्के नीले रंग की रेशमी साड़ी पहने, काउन्टर की ओर मुँह किये खड़ी थी, ...साड़ी का पल्ला बड़ी नफासत के साथ बाँई ओर को लटक रहा था। पल्ले की किनारी झालदार थी, उसके ऊपर हल्के गुलाबी रंग की तीन धारियाँ पड़ी हुई थी। उसके बाँए हाथ में एक पैकेट था और दाँए हाथ की लम्बी और पतली सी उंगलियाँ काउन्टर पर मंद–मंद थिरक सी रही थी।"[4]

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 23

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 5

3 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 24

4 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 35

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'जहाज का पंछी' में आकृति वर्णन द्वारा स्वयं उपन्यास का नायक अपना चित्रण करता है– "मेरे सिर के रूखे–सूखे, अस्त–व्यस्त बाल, घनी घास से भरी क्यारियों की तरह दो गलमुच्छे और उन गलमुच्छों के अगल–बगल और नीचे फैले हुए, एक हफ्ते से न छीले गए, फसल कटने के बाद शेष रह जाने वाले सूखे खूँटों की तरह रक्तहीन सफेद चेहरा, धसी हुई (और सम्भवतः अप्राकृतिक प्रकाश से चमकती हुई) आँखे, गढ्ढे पड़े हुए गाल और गालों की ओर ठुड्डी की उभरी हुई, नुकीली हड्डियाँ तिस पर कई दिनों से धुलने की सुविधा न होने से मैला कुर्ता और मैली सी धोती...।"[1]

अप्रत्यक्ष या परोक्ष प्रणाली : चरित्र–चित्रण की परोक्ष प्रणाली के अन्तर्गत पात्र के चरित्र का उद्घाटन करने के लिए आत्मविश्लेषण, स्मृति, विभिन्न शारीरिक प्रक्रियाओं का निरूपण पत्र, डायरी, स्वप्न, विभ्रम, फैंटेसी, स्वीकारोक्ति आदि अनेक विधियों का सहारा लिया है। इन विधियों की सहायता से जोशी जी पात्रों के चरित्रगत सूक्ष्म पहलुओं का उद्घाटन करने में सफल हुए हैं।

पात्रों के आत्मविश्लेषण द्वारा चरित्र का उद्घाटन करने की प्रवृत्ति इलाचन्द्र जोशी के सभी उपन्यासों में दिखाई देती है। पात्रों के अन्तर्मन के गूढ़ रहस्यों का अंकन करने के लिए उन्होंने आत्मविश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लिया है। इसकी सहायता से पात्रों के आत्मचिन्तन, आचरण, स्वभाव आदि के द्वारा उनके व्यक्तित्व को पाठकों के सामने उघाड़कर रख देते हैं। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा अपने स्वभाव का वर्णन करते हुए कहती है– "एक स्त्री दूसरी स्त्री के सामने अपना डरपोकपन जाहिर नहीं करना चाहती; परपुरूष के (विशेषतया अपने प्रेमिक जन के) निकट अपनी दुर्बलता, हीनावस्था और दुर्गति का वर्णन करने में अवर्णनीय आनन्द का अनुभव करती है। डॉक्टर साहब के निकट मैं दिल खोलकर अपनी शोचनीय अवस्था व्यक्त करके उनकी समवेदना

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 10–11

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उभाड़ने की चेष्टा करती थी।"[1] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर जयंती को देखने के बाद अपने अन्तर्मन का विश्लेषण करता है– "मैं अन्यमनस्क होकर ये सब बातें सुन रहा था। हृदय के प्रत्येक रक्त–कण में एक मीठी उदासी समा गई थी। एक अनोखी अनुभूति, एक व्याकुल चेतना मेरी रगों में संचारित हो रही थी, ऐसा प्रतीत होता था कि जमुना में जाकर नहाना, ताजमहल की शोभा देखना, इस नूतन परिचित शहर की सैर करना सब निरर्थक और मिथ्या है; परम् सत्य जो कुछ है, उसे छोड़कर व्यर्थ ही हम लोग बाहर आकर भटक रहे हैं।"[2]

'पर्दे की रानी' की नायिका आत्मविश्लेषण करते हुए कहती है– "वास्तव में मुझे अपना अस्तित्व ही प्रकृति की एक विचित्र खाम–खयाली लगता था। न अपने अस्तित्व की कोई उपयोगिता मुझे दिखाई देती थी, न सृष्टि के विपुल चक्र के साथ कहीं किसी रूप में मैं अपना सामंजस्य पाती थी। मैं किसी पुच्छल तारे के एक ऐसे विच्छिन्न खण्ड की तरह महाशून्य में निरूद्देश्य भटकती हुई अपने को मालूम कर रही थी, जो अपने भ्रमण चक्र की नियत परिधि से च्युत हो गया हो, जिसे इस बात का पता न हो कि न जाने कब महाकाश का कौन शक्तिशाली नक्षत्र उसे अपनी ओर प्रबल वेग से आकर्षित कर बैठेगा।"[3] 'मुक्तिपथ' में सुनन्दा अपनी पूर्वस्मृतियों का विश्लेषण करती है– "विलसिया के कूटचक्र, भाभी और भैया के मनोभाव में परिवर्तन नौकरों का बदला हुआ रूख, पड़ोस की स्त्रियों की छींटेबाजी यह सब केवल इसलिए सम्भव हुआ कि वह राजीव बाबू को बीच–बीच में चाय और काफी पिलाया करती थी और उनसे खुलकर बातें किया करती थी; कितने बड़े झूठ ने कैसी आसानी से इतने सब लोगों पर विजय पा ली। यह सब इस बात का प्रमाण है कि समाज का कितना घोर पतन दीर्घकाल से प्रचलित मिथाचार के फलस्वरूप हो चुका है।"[4] 'जहाज

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 62

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 75–76

4 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 193–194

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

का पंछी' का नायक अपने अन्तर्मन का विश्लेषण करते हुए कहता है "समग्र मानवीय अवचेतना के महापारावार के अंधेरे गर्भ के भी नीचे स्तर–प्रति–स्तर दबी पड़ी, युग–युग की दुर्निवार और उर्ध्वमुखी महाकांक्षाएँ ऊपर उठ–उठकर सम्पूर्ण भू–चेतना के मुक्त प्रकाश पर सम–भाव से छा जाने के लिए जैसे अधीर हो उठी थी और अपने साथ छा जाने के लिए जैसे अधीर हो उठी थी और अपने साथ जुड़े हुए मेरे अन्तर्मन को भी उसी महाताल और महालय के साथ आन्दोलित कर रही थी।"[1]

'भूत का भविष्य' का भूतनाथ अपने अन्तर्मन के गूढ़ रहस्यों का विश्लेषण करते हुए कहता है– "एक हरिजन समाज में पैदा होने के यह कैसे भयंकर दण्ड मुझे भुगतने पड़ रहे हैं; मेरा तनिक भी हाथ विधाता की इस योजना में न होने पर भी मैं जघन्य अपराधियों की तरह एक से एक विचित्र परिस्थितियों में विवश भटकता जा रहा हूँ। डकैती के रूपयों पर निर्भर करके जीना पड़ रहा है। यह कैसी मारक विडम्बना है; यह कोइ नहीं समझेगा। लोग कहेंगे इस जीने से मर जाना अच्छा, पर मैं कहता हूँ कि मैं क्यों मरूँ। और फिर मैं यदि डूबकर या जहर खाकर मर भी जाऊँ तब भी मेरे लाखों करोड़ों भाइयों का क्या उद्धार होगा इससे? इसलिए मैं मरना नहीं चाहता। इस अन्याय के विरूद्ध आखिरी दम तक लड़ता और जूझता जाऊँगा।"[2]

पूर्वस्मृति द्वारा पात्रों की आन्तरिकता का चित्रण किया गया है। लज्जा पूर्वस्मृति द्वारा अपने बचपन के दिनों को याद करती है– "हाय! भाई–बहनों के साथ आनन्द से हिल–मिलकर रहने और निर्द्वन्द भाव से मुक्त विचरकर खेलकूद करने के उन प्यारे दिनों को अतीत की कराल छाया कितनी निष्ठुरता के साथ हरण कर ले गई। नवल प्रभात के पक्षी की तरह मेरी आत्मा कितनी निष्पाप, कितनी विशुद्ध और कितनी आनन्दमय थी। भाई–बहन के बालकपन का निर्मल

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 343

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 157

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

प्रेम! कितना दुर्लभ और कितना अमूल्य है।"[1] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर शान्ति के घर छोड़कर चले जाने के पश्चात् उसकी स्मृति में खो जाता है – "जब से मेरा शान्ति से परिचय हुआ तब से एक–एक घटना मायालोक के विचित्र छाया स्वप्न की स्मृति की तरह जागरित होकर मेरे मन और मस्तिष्क को आच्छन्न करने लगी।"[2] 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ स्मृति द्वारा अपनी चरित्रगत प्रवृत्ति को प्रकट करता है– "किन–किन उच्च श्रेणी की स्त्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का मौका उसे मिला था, जिनसे किसी कारण से वह कतराता रहा। इसके बाद जिन–जिन निम्न श्रेणी की स्त्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर चुका था, उनके चित्रों को अपना मानसिक 'अलबम' खोलकर उलटने लगा।"[3] 'जहाज का पंछी' में लीला के यहाँ जाने पर नायक विचित्र स्मृतियों में खो जाता है– "उस विचित्र, अत्यन्त अस्पष्ट और प्रकट में अर्थहीन स्वप्न की अनुभूति मात्र से एक कारण रहित आतंक की अस्फुट भावना मेरे सचेत मन पर काफी देर तक छायी रही। आँखे ऐसी सजग हो गयी थी, जैसे नीद से कभी उनका कोई सम्बन्ध ही न रहा हो।"[4]

पात्रों की रहस्यात्मक प्रवृत्तियों के उद्घाटन के लिए मोहाच्छन्न स्थिति का सहारा लिया है, जिसमें पात्र किसी अन्य पात्र के कथन द्वारा मोहाच्छन्न स्थिति में पहुँच जाता है। 'पर्दे की रानी' में मनमोहन के द्वारा वेश्या माँ और हत्यारे पिता की बात सुनकर निरंजना मोहाविष्ट हो जाती है– "मनमोहन जी का बोलना मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे दूर–दूर, पृथ्वी की सीमा रेखा के पार किसी घोर अन्धकारपूर्ण शैतान–लोक से एक विषवाणी ईथर में तरंगित होती हुई मेरे मस्तिष्क के यन्त्र से टकराकर अत्यन्त निर्दयता के साथ निरन्तर गूँज रही हैं, मैं हिप्नोटिज्म की सी अचेत किन्तु साथ ही जाग्रत अवस्था में उनकी बातें सुन रही

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 7

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 127

3 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 37

4 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 331

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

थी।"[1] इसी प्रकार 'मुक्तिपथ' में राजीव द्वारा सुनन्दा से समस्त बन्धनों को तोड़ देने की बात सुनकर सुनन्दा मोहाविष्ट हो जाती है– "सुनन्दा कुछ क्षणों तक स्वप्नाछन्न–सी राजीव की बात सुनती रही, उसके बाद वह धीरे–धीरे समाधि–मग्न सी होने लगी थी, पर उस समाधि की सी अवस्था में राजीव का एक–एक शब्द, उसकी अवचेतना में अपने निश्चित निर्धारित स्थान पर बैठता जा रहा था, जैसे कोई रहस्यमयी शक्ति उसके अंतःपट पर उन शब्दों को टाइप करती चली जा रही हो, या किसी प्लांचेटनुमा रहस्यात्मक यंत्र द्वारा किसी दूर–स्थित आत्मा का सन्देश उस पर लिखा जा रहा हो। उसकी दोनों आँखे मूँद सी गयी थी और उनसे आँसुओं की अविरल धारा बही चली जा रही थी। वह न हिलती थी, न डुलती थी, न आँसुओं को पोछती थी।"[2]

'त्याग का भोग' में नृपेन्द्ररंजन का प्रयोग कर उसे मोहाच्छन्न करता है। इसलिए मोहाच्छन्न स्थिति में नृपेन्द्ररंजन मनिया से कहता है– "....मैं ही अब तुम्हारा सब–कुछ हूँ। इसलिए अब से चौबीसों घंटे तुम मेरा ही ध्यान करती हुई सुख से रहा करो। तुम मेरी हो! मेरी हो! मेरी हो! मैं तुम्हारा हूँ। तुम्हारा हूँ! तुम्हारा हूँ! देखो अब भूल न जाना, समझी? हिप्नोटिक निद्रा के भीतर से मनिया बोली– "हाँ समझी," "क्या?" "मैं तुम्हारी हूँ, और तुम्हीं मेरे सबकुछ हो,"[3] सिल्विया भी सम्मोहन कला में सिद्धहस्त है। 'निर्वासित' में महीप नीलिमा पर सम्मोहन क्रिया का प्रयोग कर उसे मोहाविष्ट करता है– "जाने कौन रहस्यमय दिव्य प्रकाश अचानक नीलिमा की आँखों के आगे झलक उठा था, जिससे उस क्षण में महीप उसे सर्वदर्शी अन्तर्यामी के रूप में लगने लगा, जिसके आगे उसके (नीलिमा के) अन्तर्लोक की भूत, वर्तमान और भविष्य की प्रत्येक अनुभूति जैसे स्फटिक–निर्मल जल के छिछले कुण्ड के नीचे चमकने वाले कंकड़ों की तरह स्पष्ट विभाजित हो रही थी और छिपी नहीं रह सकती थी। आज महीप का

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 126–127

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 87

3 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 83

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'बबुआ' रूप एकदम विलीन हो गया था। नीलिमा को ऐसा लगता था, जैसे शरीरिक दृष्टि से भी वह कद में बहुत लम्बा हो चला है।"[1]

पात्रों के सूक्ष्म मनोभावों को प्रकट करने के लिए पत्र एवं डायरी का सहारा लिया है। पत्र द्वारा उन्होंने पात्रों के आन्तरिक उद्‌गारों एवं प्रवृत्तियों को उजागर किया है। 'निर्वासित' में महीप को लिखे पत्र में प्रतिमा लिखती है– "छुटपन में अपने जीवन की किशोरावस्था में मैंने तुम्हें अपने भावी जीवन का ध्रुवतारा समझा था। मेरे भीतर यह विश्वास अड़िग रूप से वर्तमान था कि उस ध्रुवतारे का अनुसरण करते हुए मैं घोर से घोर संकट की स्थिति में भी एक सुनिश्चित पथ से भटक नहीं सकती।"[2] 'लज्जा' उपन्यास में राजू के दार्शनिक चिन्तन और उसके मन में विद्यमान सूक्ष्म मनोभावों का चित्रण डायरी द्वारा किया गया है– ".....क्यों सबलों में स्वार्थपूर्ण भोग के प्रति उत्कट लालसा देखकर घृणा और प्रतिहिंसा के भाव से मेरा दम घुटने लगता है? क्यों रोग–शोक और दुःख–दारिद्रय की कालिमा से पृथ्वी माता का समस्त शरीर जर्जरित और उत्तप्त हो रहा है? क्यों अन्त में दुर्बलों की तरह सबलों की भी गति समान होकर दोनों को किसी भंयकर पाषाण से टकराकर किसी अन्धकारमय विकराल छाया का ग्रास बनना पड़ता है? इन सब बातों को देखते हुए भी कैसे मेरे मन में आनन्द की उमंगे हिलोरे ले सकती हैं?"[3] 'निर्वासित' में धिराज की डायरी से उसके जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश पड़ता है– "मेरे मन में बार–बार यह प्रश्न उठता है कि क्या संघर्ष ही जीवन का चरम ध्येय है? संघर्ष केवल संघर्ष के लिए? कितनी बड़ी मूर्खता है यह वस्तु तन्त्रवादियो, भौतिकवादियों और प्रगतिवादियों की! इन लोगों का जीवन दर्शन एकमात्र संघर्ष, सामाजिक जीवन

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 242

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 345

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 146

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

में संघर्ष, राष्ट्रीय जीवन में संघर्ष और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में संघर्ष। उनका प्रगतिवाद संघर्षवाद के सिवा और कुछ नहीं है।"[1]

पात्र की दमित इच्छाओं, प्रवृत्तियों एवं अभुक्त कामनाओं पर प्रकाश डालने के लिए इलाचन्द्र जोशी ने फैंटेसी अर्थात छायात्मक कल्पना का प्रयोग किया है। 'पर्दे की रानी' में इन्द्रमोहन की अभुक्त कामना उसकी इस कल्पना से प्रकट होती है– "मैं एकान्त रूप से भाव–मग्न होकर यह स्वप्न (जो कि उस समय के लिए मेरे लिए प्रत्यक्ष से भी अधिक सत्य हो उठता है) देखने लगता हूँ कि सारी पृथ्वी में प्रलय की बाड़ आ गई है, और उस बाढ़ की सामूहिक विनाशलीला समाप्त हो जाने के बाद केवल हम दो मानव प्राणी आप और मैं बच गये हैं और तब मेरे मन में यह आकांक्षा प्रबल हो उठती है कि उस भीषण निर्जन के स्तब्ध सन्नाटे के बीच में उस अनन्तव्यापी मौन हाहाकार की भाँय–भाँय के एक तार स्वर में हम दोनों समाज और संसार की पृथ्वी, आकाश और अन्तरिक्ष की, प्रत्यक्ष और अदृश्य की किसी भी बाधा की वास्तविक या काल्पनिक आशंका से रहित होकर मन और आत्मा से एक रूप में मिलकर लय हो जाये।"[2]

'निर्वासित' में महीप जेल में अपने अंतिम दिनों में विभिन्न छायात्मक कल्पनाओं में निमग्न रहता है– "उसे ऐसा बोध होने लगता कि सभ्यता की सृष्टि, स्थिति और विनाश के तीनों दृश्य एक साथ उसके सामने से होकर गुजर रहे हैं। स्थिति बीच में स्थिर है, यद्यपि बीच में कभी–कभी उसके ऊपर ग्रहण सा छा जा रहा है, तथापि वह ग्रहण स्थायी न रहकर फिर उपग्रहण सा छा जा रहा है, तथापि वह ग्रहण स्थायी न रहकर फिर उपग्रहण में परिणत हो जा रहा है। स्थिति के उस स्थिर दृश्य के चारों ओर सृष्टि और विनाश दौड़ लगा रहे हैं। कभी विनाश सृष्टि को पीछे छोड़कर आगे बढ़ा जा रहा है और कभी सृष्टि आगे

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 284

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 194–195

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

बढ़कर विनाश को पीछे छोड़ देती है। कौन चित्र सृष्टि का है और क्यों? कौन विनाश का है और क्यों, इस सम्बन्ध में उसे तनिक भी भ्रम नहीं हो रहा था। पर विनाश अपानी विश्वग्रासी लपलपाती हुई रक्त जिह्वाओं को बाहर निकालकर इस तेजी से क्यों आगे बढ़ा जा रहा है?"[1] 'भूत का भविष्य' में नन्दा एक विचित्र कल्पनालोक में खो जाती है– "जहाँ चारों ओर से प्रलयकालीन बाढ़ आयी हुई थी, और वह कहीं धरती का एक ऐसा सुरक्षित टुकड़ा खोजने में जुटी हुई थी, जहाँ वह आराम से अपने दो पाँव पसार सके, पर कहीं भी धरती का ऐसा सुरक्षित टुकड़ा नहीं पा रही थी, जब काफी देर बाद उसका वह व्यर्थ स्वप्न–जाल टूटा तब लगा कि कैसा भयंकर दुःस्वप्न था, वह जिसमें उसे एक बेताल की ठठरी ने अपनी लम्बी–लम्बी हड्डीनुमा उँगलियों में धर दबोचा था।"[2]

पात्रों के दुष्कृत्यों एवं आन्तरिक ऊहापोह की स्थिति को उद्घाटित करने के लिए इलाचन्द्र जोशी ने विभ्रम का सहारा लिया है। 'लज्जा' में लज्जा को जब रंजन एक हॉरिबुल मरीज की बात बताता है तो पापवृत्ति के कारण लज्जा को विभ्रम होने लगता है कि कहीं वह रोग उसे न हो जाय– "सोचते–सोचते मेरा सारा शरीर जर्जरित होने लगा और मैं ऐसा अनुभव करने लगी, जैसे अभी–अभी मेरे शरीर में स्थान–स्थान पर फोड़े उत्पन्न होने लगे हों।"[3] 'प्रेत और छाया' में मंजरी को अंधी माँ की प्रेतात्मक छाया पारसनाथ को अपने चारों नाचते दिखाई देती है। ".....पर बीच में जब उसकी नींद किसी दुःस्वप्न के बाद अचानक उचट जाती तो मंजरी की स्वर्गीया अंधी माँ की प्रेतात्मक छाया एक नए ही रूप में उसके सामने प्रकट होती और विकट अट्टहास की मुद्रा के साथ भौतिक इंगित द्वारा मानों कहती 'तुम सहज में अब इस बंधन से त्राण नहीं पा सकते! अभी न जाने और कितने फंदे तुम्हारे गले पर पड़ते रहेंगे।' वह अपने पापी मन के भ्रम से उत्पन्न उस आतंककारी भौतिक

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 416–417

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 56

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 89

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

छाया से रक्षा पाने के उद्देश्य से कंबल से मुँह ढक लेता; पर कंबल के भीतर, उसकी बंद आँखों के आगे भी वही भीषण प्रतिहिंसात्मक छाया अपना विकराल, किन्तु स्पर्शातीत रूप दिखाने से बाज न आती, बड़े ही कठिन प्रयास के बाद वह उस भ्रामरी छाया की लोमहर्षक माया से अपने को मुक्त करने में समर्थ हो पाता था।"[1]

पात्रों के चरित्रगत दोषों को उजागर करने के लिए स्वीकारोक्ति का सहारा लिया गया है। अपनी गलती के कारण पात्रों के अन्दर पश्चाताप की भावना उत्पन्न होती है और वे अपनी गलती को स्वीकार करते हैं। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा अपने भाई की हत्या का कारण खुद को मानते हुए पश्चाताप करती है– "....किस जले मुँह से यह शब्द अब मैं निकाल सकती हूँ? किस निर्लज्ज लेखनी से इन दो अक्षरों को लिख सकती हूँ? भगवान! इस बेहयाई का क्या कुछ ठिकाना है! जान बूझकर अपने प्यारे भाई की हत्या करके उसी की गुण गाथा गाने का पाखण्ड रचती हूँ।"[2] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर शांति के सामने अपनी संकीर्णवादिता को स्वीकार करता है– "तुम्हारा कोई दोष नहीं है, शान्ति! मैं सचमुच बड़ा नीच हूँ और दोष मेरा ही है। बलदेव दरअसल अच्छा आदमी है और उससे बातें होने पर तुम्हारा प्रसन्न होना स्वाभाविक था, पर मैंने अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण उस बात को इस सीधे रूप में नहीं लिया, इसी का यह दण्ड मुझे मिला है कि अपने स्वभाव पर दुःख और क्रोध होने से मेरी आँखों में बरबस आँसू निकल पड़े।"[3] 'पर्दे की रानी' में इन्द्रमोहन शीला की मृत्यु के बाद निरंजना के सामने स्वीकार करता है कि शीला को विष उसी ने दिया है– "शीला की मृत्यु किसी रोग से नहीं हुई; बल्कि मैंने विष देकर उसका काम तमाम कर दिया।"[4] और अन्त में पश्चाताप के कारण वह ट्रेन से कूदकर

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 287

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 7

3 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 93

4 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 205

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आत्महत्या कर लेता है। 'प्रेत और छाया' में अन्त में पारसनाथ पश्चाताप करते हुए मंजरी के सामने अपने पापकर्म को स्वीकार करता है– "मैं जीवित मनुष्यों के संसर्ग में रहने पर भी वास्तव में प्रेतात्माओं और छायाओं के संघर्ष में जीवन बिताया करता था, और जाग्रत अवस्था में रहने पर भी सब समय निद्रा विचरण के रोगी का सा आचरण किया करता था। मेरा मन सब समय ऐसा उद्भ्रान्त और चंचल रहता था कि न मैं स्वयं कभी एक क्षण के लिए भी चैन से रह पाता था, न दूसरों को चैन से रहने देता था। एक जरा सी बात ने मेरे सारे व्यक्तित्व को ऐसे भयंकर रूप में डाँवाडोल कर दिया। इससे स्पष्ट है कि मैं किस कदर ओछा हूँ और मेरा व्यक्तित्व किस कदर पोपला और सारहीन है।"[1]

उपर्युक्त विधियों के अतिरिक्त इलाचन्द्र जोशी ने पात्रों के चरित्र–चित्रण के लिए अन्तःप्रज्ञाः, शारीरिक एवं मानसिक रूग्णता आदि अनेक विधियों का प्रयोग किया है। अन्तःप्रज्ञाः द्वारा पात्रों के अन्तःकरण की आवाज द्वारा उन्हें आने वाले संकट से सावधान कराना एवं पात्रों को सही मार्ग पर ले जाने का कार्य हुआ है। इसी प्रकार शारीरिक एवं मानसिक रूग्णता द्वारा उनके मन के उथल–पुथल, अनिद्रा, हिस्टीरिया, फिट एवं अन्य प्रकार की विभिन्न प्रवृत्तियों का उद्घाटन किया है।

इस प्रकार इलाचन्द्र जोशी ने चरित्र–चित्रण के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही प्रणालियों का प्रयोग कर विभिन्न मनोवैज्ञानिक पद्धतियों का सहारा लिया है। ये पद्धतियाँ व्यक्ति के चरित्र के उद्घाटन में सहयोग देती हुई कथानक में सजीवता व यथार्थता का आभास दिलाती हैं। पात्रों की शारीरिक अस्वस्थता, मोहाच्छन्न स्थिति एवं अन्तःप्रज्ञा जैसी चरित्र–चित्रण की नई विधियों का प्रयोग कर उन्होंने मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण को एक नवीन आधार प्रदान कर उसे समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 408–409

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मनोविश्लेषणप्रधान चरित्र शिल्प : मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों ने मानव मन का सूक्ष्म विश्लेषण कर उसका यथार्थ एवं नग्न चित्रण प्रस्तुत कर उपन्यासों को मनोविश्लेषणात्मक शिल्प के रंग में सरोबार कर दिया है। "मनोविश्लेषवाद ने जीवन के समस्त स्वीकृत मूल्यों और यथार्थ के स्तरों को अस्वीकृत कर नये सिरे से जीवन सत्यों और मूल्यों के बारे में सोचने को बाध्य किया। मानव चरित्रों के स्वीकृत प्रतिमानों को खण्डित कर उनके भीतर स्थित नंगी वास्तविकता को अनावरित कर दिया।"[1] मनोविश्लेषण की नित नयी–नयी खोजों, प्रणालियों एवं विभिन्न प्रयोगों ने चरित्र–चित्रण की पूर्वधारणाओं को बदलकर नवीन धारणाओं को जन्म दिया है। पात्रों की मानसिक कुण्ठाओं, अमूर्त चित्रों, असाधारण प्रवृत्तियों एवं असामान्य व्यवहारों का उद्‌घाटन एवं विश्लेषण ही इन मनोविश्लेषणात्मक चरित्रों के माध्यम से हुआ है। मनुष्य के अन्तर्जगत में विभिन्न इच्छाएँ विद्यमान रहती हैं और जब इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है, पर इनका दमन होता है तो मनुष्य के अन्दर अनेक प्रकार की कुण्ठाओं का जन्म होने लगता है। उसका चरित्र असाधारण हो जाता है और वह असामान्य व्यवहार करने लगता है। यही पात्र मनोवैज्ञानिक केस का रूप धारण कर लेते हैं। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक पात्रों की अवतारणा हुई है। ये पात्र हीनता, कुण्ठा, कामभावना, उलझनों, तनावों आदि से ग्रस्त होते हैं।

इलाचन्द्र जोशी ने मनोविश्लेषण द्वारा पात्रों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक चरित्र–चित्रण दो रूपों में किया है– प्रथम स्वयं पात्र द्वारा और दूसरा उपन्यासकार या अन्य पात्र द्वारा।

स्वयं पात्र द्वारा चरित्र–चित्रण में उन्होंने पात्रों के मुखर चिन्तन, स्वगत भाषण अथवा आत्मस्वीकृति द्वारा उनका चारित्रिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इस प्रकार का चरित्र–चित्रण 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'त्याग का भोग' और 'जहाज का पंछी' उपन्यासों में अधिक हुआ है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा

---

1 'हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा' : रामदरश मिश्र, पृष्ठ – 83

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

स्वयं अपनी चरित्रगत प्रवृत्तियों को पाठकों के सम्मुख रखती है– ".....प्रकट में यद्यपि मैं बिना उद्देश्य के आती थी, तथापि एक अस्पष्ट उद्देश्य मेरे अन्तस्तल में वर्तमान रहता था, वह उद्देश्य था लुब्ध और मुग्ध पुरूषों को अपने अतुल रूप से छकाने का,"[1] 'पर्दे की रानी' की निरंजना चिन्तन करती है– "इन्द्रमोहन जी पर मार्मिक कटाक्ष–वाण निक्षेप करने का मेरा उद्देश्य क्या था? स्पष्ट ही इस प्रकार के आचरण का एकमात्र उद्देश्य यही हो सकता है कि उन्हें अपने प्रेमपाश में बाँधने की इच्छा रखती थी।"[2] 'त्याग का भोग' में नृपेन्द्ररंजन मनिया को महान बताते हुए अपनी गलती को स्वीकार करता है – "तुम ठीक कहती हो मनिया, मैं ही गलती पर था, मुझे दुःख है कि मैं तुम्हें अभी तक नहीं समझ पाया, अभी तक तुम्हारे सम्बन्ध में मेरे मन में इस प्रकार की भ्रांतिया बनी हुई हैं। तुम बहुत महान हो मनिया, तुम्हारी आत्मा के विस्तार का पार पाना मुझ जैसे संकीर्ण प्रकृति पुरूष द्वारा सम्भव नहीं! तुम....."[3] 'भूत का भविष्य' में राकेश का चरित्र एक कामुक एवं स्वार्थी मनुष्य का चरित्र है जो रोमांस के इरादे से नन्दा को भगाकर इलाहाबाद लाता है। इस बात को वह स्वयं स्वीकार करता है– "..... ..कहाँ तो वह एक अभिनव रोमांस का जीवन बिताने के लिए अपनी जान पर खेलकर नन्दा को इलाहाबाद भगा लाया था और कहां दो दिन बाद श्मशान के भूतों के आधी रात के अट्टहास का पात्र बनकर रह गया।"[4]

उपन्यासकार या अन्य पुरूष द्वारा भी विभिन्न मनोगत विशेषताओं एवं ग्रन्थियों का चित्रण किया गया है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा राजू की असाधारणता के बारे में लिखती है– "मैंने स्पष्ट देखा कि मेरा यह असाधारण भाई संसार के रात दिन के तुच्छ सुख–दुःख में लिप्त होने के लिए पैदा नहीं हुआ है, उसकी चिंता–धारा उसे किसी अपरिचित लोक को खींचे लिए जाती है,

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 21

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 55

3 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 258

4 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 64–65

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

यह सोचकर मैं आतंक से काँप उठी।"[1] 'पर्दे की रानी' में निरंजना के पर्दा प्रेम के बारे में शीला लिखती है– "मुझे यह समझते देर न लगी कि उसका इतने दिनों तक 'पर्दे' में छिपे रहने के कारण उसके स्वभाव की संकोचशीलता नहीं है, वरन् किन्हीं अज्ञात कड़ुवे अनुभवों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जो एक प्रकार की वीतरागता सी उसमें आ गई है, उसका पर्दा–प्रेम उसी का वाह्य प्रदर्शन है।"[2] 'प्रेत और छाया' में चरित्रगत कुण्ठा के कारण पारसनाथ औरतों को प्रेमालाप में फाँसकर अपनी वासनापूर्ति करता है। यहाँ तक कि वह विवाहित नंदिनी को भी अपने प्रेमजाल में फसाता है। उसका चारित्रिक विश्लेषण लेखक इन शब्दों में करता है– "नंदिनी को उस पवित्र सामाजिक श्रृंखला की सीमा रेखा से बाहर निकालकर उसे विनाश के पथ पर ले जाने की प्रवृत्ति उसे भीतर दिनों से जोर मार रही थी।"[3]

'मुक्तिपथ' उपन्यास में विजय का चरित्र एक स्वार्थी एवं धनलोलुप व्यक्ति का चरित्र है, उसके अर्थसंचयी प्रकृति का विश्लेषण लेखक ने इस प्रकार किया है– "छुटपन घोर आर्थिक अभाव में बीतने के कारण अर्थसंग्रह की उत्कट लालसा उसके भीतर घर कर गई थी।"[4] राजीव उपन्यास का असाधारण पात्र है वह काम को ही महत्व देता है। उसके बारे में सुनन्दा कहती है– "उस महापुरूष ने उस आदर्श के पीछे अपने अहम् को मिटा दिया है, अपना कहने को जैसे उसके पास अब कुछ भी नहीं रह गया, यही कारण है कि आत्म–प्रचार से वह योजनों दूर पहुँच चुका था।"[5] 'भूत का भविष्य' में नन्दा राकेश का उद्घाटन

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 18

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 17

3 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 72

4 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 78

5 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 242

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

करती है– "तुम बड़े ही विचित्र और वहमी आदमी हो, एक भूत से भी ईर्ष्या और द्वेष रखते हो। निकम्मे और नपुंसक व्यक्ति ही इस कदर ईर्ष्यालु होते हैं।"[1]

मानसिक प्रवृत्तियों की प्रधानता : इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में मनुष्य के अन्तर्मन में विद्यमान विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों का उद्‌घाटन किया है। उन्होंने विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं से ग्रस्त व्यक्तियों को अपने उपन्यासों का पात्र बनाया है। उनके सभी पात्र विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों, अहमन्यता, मानसिक विकृति, कामकुण्ठा, आत्मरति, संशय, संदेह, ईर्ष्या, संताप, मतिभ्रम, परपीड़न, स्वपीड़न, बौद्धिक यन्त्रणा आदि विभिन्न कुण्ठाओं के शिकार हैं। अधिकांश पात्र इन ग्रन्थियों के खुल जाने के कारण स्वस्थ हो जाते हैं। ये प्रवृत्तियाँ उन्हें कभी–कभी पहली पीढ़ी अर्थात अपने माता–पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त होती हैं जो आगे चलकर विभिन्न कुण्ठाओं का कारण बनती हैं, जिससे वे मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाते हैं और असाधारण आचरण करने लगते हैं।

'लज्जा' उपन्यास में लज्जा के अन्दर दमित कामचेतना विद्यमान है। कामग्रन्थि के दमन के कारण उसमें परपीड़न की वृत्ति उत्पन्न होती है– "मैं राजू के अन्याय का बदला लेना चाहती थी, इसलिए प्रतिहिंसा के भाव से प्रेरित होकर तत्काल सम्मत हो गई।"[2] उसमें स्वपीड़न भी विद्यमान है। राजू के अन्दर अहं भावना के साथ–साथ घृणा और प्रतिहिंसा की भावना भी विद्यमान है– "क्यों सबलों में स्वार्थपूर्ण भोग के प्रति उत्कट लालसा देखकर घृणा और प्रतिहिंसा के भाव से मेरा दम घुटने लगता है।"[3] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर अभुक्त कामवासना से ग्रस्त है। जयंती और कैलाश असाधारण पात्र हैं। जयंती से प्रथम मिलन के साथ ही नन्दकिशोर में कामकुण्ठा की भावना घर कर जाती है। नन्दकिशोर अहंवादी है। अहंवाद के कारण ही वह दो स्त्रियों को चाहने के बावजूद एक को

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 64

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 94

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 146

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भी सुखी नहीं रख सका। उसके अन्दर सन्देह की भावना भी विद्यमान है। 'पर्दे की रानी' में निरंजना माता–पिता के संस्कारों के कारण मानसिक रूप से रूग्ण हैं वह कहती है– "मैं एक वेश्या की ही लड़की नहीं हूँ बल्कि एक खूनी बाप की भी बेटी हूँ।"[1] उसके अन्दर स्वपीड़न व परपीड़न वृत्ति भी है। इन्द्रमोहन कामकुण्ठा से ग्रस्त पात्र है जो निरंजना के कौमार्य को भंग करने के लिए स्वयं अपनी पत्नी शीला को विष देकर मार देता है। आत्मपीड़न के कारण वह स्वयं भी आत्महत्या कर लेता है।

'प्रेत और छाया' में पारसनाथ हीनता, अहंकारी, कामुक, पतित, घृणा एवं प्रतिहिंसा की भावना से ग्रसित पात्र है। उसकी ये कुण्ठायें उसे बार–बार गलत मार्ग की ओर धकेलती हैं। नन्दिनी भी कामभावना से पीड़ित नारी पात्र है। 'मुक्तिपथ' में राजीव एक असाधारण पात्र है। उसे अवचेतन मन में दमित कामचेतना विद्यमान है। विभिन्न कुण्ठाओं के कारण उसके अन्दर स्वरति की भावना होती है। कर्म को ही महान बताने वाला राजीव के जीवन में व्यक्तिगत रूचियों के लिए समय नहीं हैं सुनन्दा विधवा जीवन को प्रकट करती एक आदर्श भारतीय नारी है। उसके अन्दर प्रबल काम की भावना विद्यमान है। विजय एक स्वार्थी व अर्थसंचयी प्रवृत्ति का पात्र है। अर्थसंचय के लिए वह सुनियोजित व रहस्यपूर्ण ढंग से अपनी पहली पत्नी की हत्या तक कर देता है। 'निर्वासित' का महीप असाधारण प्रवृत्ति का पात्र है, जो किसी देवी प्रेरणा के कारण आई.ए.एस. की परीक्षा नहीं देता है। ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह उच्चवर्गीय भोगवादी एवं अर्थसंचयी प्रवृत्ति का है। रमा, शारदा की दीदी गौरी, नीलिमा, रूपा आदि उसकी भोगवादी प्रवृत्ति के शिकार होते हैं। धीराज की हत्या का कारण भी उसकी भोगवादी प्रवृत्ति है।

'सुबह के भूले' में गुलबिया की हीनतानुभूति का चित्रण है। फैशनेबल समाज में जाकर अपने आप को देखकर उसमें आत्मलघुता की भावना घर कर

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 138

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जाती है। 'त्याग का भोग' में बुर्जुवा संस्कारों में पालित नृपेन्द्ररंजन कामकुण्ठा से ग्रसित है। दमित कामचेतना के कारण उसमें हीनतानुभूति और स्वपीड़न की वृत्ति उत्पन्न होती है। मनिया को पाने के लिए वह उस पर हिप्नोटिज्म का प्रयोग करता है। चारित्रिक दृढ़ता के अभाव के कारण तेजाब से मुँह झुलस जाने पर वह मनिया से विरक्त होकर शोभना की ओर आकर्षित होता है। वीरेन्द्र सामन्ती संस्कारों में पालित–पोषित होने पर भी विद्वेष की भावना से ग्रस्त है। मनिया असाधारण पात्र है। शोभना अभुक्त कामनाओं से ग्रसित नारी है। 'जहाज का पंछी' का नायक असाधारण पात्र है। वह कर्मठ, स्वाभिमानी एवं दृढ़ मानसिक इच्छाशक्ति सम्पन्न युवक है, जो विषम परिस्थितियों में भी घबराता नहीं है और दयनीय स्थिति में भी उसके अन्दर हँसने की क्षमता विद्यमान है, जो नायक की ओर आकर्षित होती है। वह अपना सब–कुछ लुटाकर नायक को पाना चाहती है। 'ऋतुचक्र' में अभुक्त कामनाओं से ग्रस्त विभिन्न पात्रों का मनोविश्लेषण किया गया है। 'भूत का भविष्य' में घृणा, प्रतिहिंसा की भावना से ग्रस्त युवक भूतनाथ की कथा है। समाज की प्रताड़ना से बचने के लिए वह असाधारण व्यवहार करता है। राकेश कामकुण्ठा से ग्रसित है, जो नन्दा को इलाहाबाद भगाकर ले जाता है।

इलाचन्द्र जोशी द्वारा पात्रों के चरित्र–चित्रण के विश्लेषण के ज्ञात होता हैं कि इनके पात्र सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी विभिन्न प्रवृत्तियों का उद्घाटन करते हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक व्यक्ति चरित्रों व असाधारण नारी–पुरूषों की अवतारणा की है। 'लज्जा' उपन्यास की लज्जा का घृणामयी नारी रूप, 'संन्यासी' में नन्दकिशोर का अहंवादी रूप, 'पर्दे की रानी' में निरंजना का प्रतिहिंसात्मक रूप, 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ का नारी जाति के प्रति घृणा, 'सुबह के भूले' में गुलबिया का हीन भावना वाला रूप, 'त्याग का भोग' में मनिया का दमित कामवासना वाला रूप एक असाधारण और असामान्य व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, जिनका वर्गीकरण केवल मनोविश्लेषण

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

के आधार पर किया जा सकता है। इलाचन्द्र जोशी ने इसी मनोविश्लेषण को आधार बनाकर पात्रों के व्यक्तित्व को पाठकों के सम्मुख रखा है।

❖❖❖❖

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/